International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गिग कार्यबल का स्वरूप, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाये

डॉ. सुरेश तोमर

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र , क्रान्तिकारी शहीद छीतूसिंह किराड़, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलीराजपुर (म.प्र.)

सारांश

वर्तमान समय में तकनीकी परिवर्तन, डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं इंटरनेट की उपलब्धता के साथ उपभोक्ताओं की बदलती आवश्यकताओं ने रोजगार की पारंपरिक अवधारणा को प्रभावित किया है। मांग के अनुसार उपलब्ध होने वाले अल्पकालिक, कार्य-आधारित एवं परियोजना-आधारित रोजगार के नए रूप विकसित हुए हैं। इसी परिवर्तन से जुड़ी अवधारणा को सामान्यतः गिग अर्थव्यवस्था कहा जाता है। इसमें कार्य करने वाले व्यक्तियों को गिग कार्यबल कहा जाता है। गिग कार्यबल में ऑनलाइन फ्रीलांसर, डिजिटल कंटेंट निर्माता, टैक्सी एवं परिवहन सेवा प्रदाता, भोजन एवं वस्तु वितरण कर्मी, घरेलू सेवाओं से जुड़े श्रमिक, ऑनलाइन ट्यूटर, डिजाइनर, प्रोग्रामर, डाटा प्रोसेसिंग कर्मी तथा विभिन्न प्रकार के स्वतंत्र पेशेवर शामिल हैं। गिग कार्यबल का विस्तार केवल तकनीकी विकास का परिणाम नहीं है, बल्कि रोजगार संरचना में हो रहे व्यापक परिवर्तन का भी संकेत है। यह व्यवस्था श्रमिकों को लचीलापन प्रदान कर सकती है साथ ही उद्यमों को मांग के अनुसार श्रम प्राप्त करने की सुविधा भी देती है। दूसरी ओर, आय की अनिश्चितता, रोजगार की अस्थिरता, सामाजिक असुरक्षा, अधिक कार्य के घंटे, डिजिटल विभाजन तथा श्रमिकों की सामूहिक सौदेबाजी की कमजोर स्थिति जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

यह अध्ययन गिग श्रमिकों की आय, कार्य अवधि, रोजगार के स्रोत, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी चुनौतियों का विश्लेषण करता है। साथ ही कौशल विकास एवं डिजिटल तकनीक के कारण गिग रोजगार के भविष्य के अवसरों का मूल्यांकन भी करना है।

शब्दकुंजी : गिग अर्थव्यवस्था, गिग कार्यबल, डिजिटल प्लेटफॉर्म, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, भविष्य में रोजगार।

1. प्रस्तावना-

21वीं सदी में तकनीकी प्रगति ने उत्पादन, व्यापार, संचार और रोजगार के स्वरूप को तेजी से बदल दिया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, डिजिटल भुगतान, और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के विस्तार ने आर्थिक गतिविधियों को विस्तार किया है। वर्तमान में इस व्यवस्था के साथ अनेक ऐसे रोजगार के रूप विकसित हुए हैं, जिनमें व्यक्ति किसी एक नियोक्ता से स्थायी रूप से जुड़ा न होकर अलग-अलग ग्राहकों या प्लेटफॉर्मों के लिए विशिष्ट कार्य करता है। इसी परिवर्तित श्रम व्यवस्था में गिग अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है। गिग अर्थव्यवस्था में कार्य सामान्यतः किसी स्थायी पद के बजाय किसी विशिष्ट कार्य, सेवा, परियोजना या मांग के आधार पर उपलब्ध होता है। इस व्यवस्था में कार्य की अवधि कुछ मिनटों से लेकर कई महीनों तक हो सकती है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति किसी डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वाहन सेवा उपलब्ध करा सकता है, कोई व्यक्ति भोजन या वस्तु वितरण का कार्य कर सकता है, कोई स्वतंत्र डिजाइनर विभिन्न ग्राहकों के लिए

परियोजनाएँ पूरी कर सकता है और कोई प्रोग्रामर अलग-अलग संस्थाओं के लिए ऑनलाइन परियोजनाएँ कर सकता है।

विश्व बैंक ने बदलती कार्य प्रकृति पर चर्चा करते हुए यह स्पष्ट किया है कि डिजिटल तकनीक रोजगार के नए अवसर उत्पन्न कर रही है और साथ ही रोजगार की शर्तें एवं कार्य प्रवृति को भी बदल रही है। इस प्रकार गिग अर्थव्यवस्था को केवल अस्थायी रोजगार की व्यवस्था के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह श्रम बाजार में मांग और आपूर्ति को जोड़ने वाली एक नई संस्थागत व्यवस्था भी है। गिग कार्यबल श्रमिक और ग्राहक के बीच संबंध सीधे न होकर डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्थापित होता है। प्लेटफॉर्म मांग की पहचान, कार्य का आवंटन, भुगतान, ग्राहक प्रतिक्रिया और कभी-कभी श्रमिक के प्रदर्शन का मूल्यांकन भी करता है। इस कारण श्रम संबंधों का पारंपरिक स्वरूप बदल जाता है।

भारत जैसे विशाल श्रमबल वाले देश में गिग अर्थव्यवस्था का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। देश में युवा आबादी, तेजी से बढ़ता डिजिटल उपयोग, स्मार्टफोन एवं इंटरनेट की पहुंच, ऑनलाइन सेवाओं का विस्तार हुआ है। शहरी उपभोक्ता गिग कार्यबल के विकास के अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कर रहे हैं। नीति आयोग ने 2022 में भारत की गिग एवं प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था पर विशेष रिपोर्ट प्रकाशित की, जो इस क्षेत्र के महत्व को नीतिगत स्तर पर स्वीकार किए जाने का संकेत है। इसलिए गिग कार्यबल का अध्ययन केवल रोजगार के एक नए रूप का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह भविष्य के श्रम बाजार, सामाजिक सुरक्षा, आय वितरण, कौशल, तकनीकी परिवर्तन तथा समावेशी विकास के अध्ययन से भी जुड़ा हुआ है।

2. गिग अर्थव्यवस्था एवं गिग कार्यबल की अवधारणा

'गिग' शब्द का शाब्दिक अर्थ संगीत उद्योग से है। सन 1926 में जब संगीतकारों को किसी एक जगह काम (रोजगार) मिलता था तब संगीतकारों द्वारा गिग शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। यह काम अस्थायी, अनिश्चित एवं अनियमित होता था। धीरे-धीरे 'गिग' शब्द को गिग अर्थव्यवस्था में शामिल किया जाने लगा। 'गिग अर्थव्यवस्था' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 2009 में टीना ब्राउन ने किया था। डिजिटल न्यूज 'द डेली बिस्ट' के संस्थापक पत्रकार टीना ब्राउन ने अपने संपादक में गिग अर्थव्यवस्था को तीन हिस्सों वाला बाज़ार बताया जो डिजिटल प्लेटफार्म पर बिचोलियों का काम करते है। मूल रूप से ऐसे छोटे या सीमित अवधि के कार्य से है जिसे किसी कलाकार या पेशेवर द्वारा किया जाता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में इस शब्द का प्रयोग ऐसे अनेक कार्य के लिए किया जाने लगा है जिनमें व्यक्ति को स्थायी रोजगार के बजाय अलग-अलग कार्य या परियोजनाएँ प्राप्त होती हैं।

गिग कार्यबल से आशय उन व्यक्तियों के समूह से है जो स्थायी एवं नियमित रोजगार संबंध के बजाय अल्पकालिक, कार्य-आधारित, परियोजना-आधारित, स्वतंत्र या एक प्लेटफॉर्म पर स्थित कार्यों द्वारा आय अर्जित करते हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी बताया की डिजिटल श्रम को व्यापक रूप से ऑनलाइन वेब-आधारित प्लेटफॉर्मों में कार्य करते है। इस प्रकार के कार्यों में परिवहन, डिलीवरी, घरेलू सेवाएँ, मरम्मत, स्थानीय सहायता और अन्य ऑन-डिमांड सेवाएँ शामिल हो सकती हैं। दूसरी ओर, ऑनलाइन कार्यों में लेखन, अनुवाद, ग्राफिक डिजाइन, प्रोग्रामिंग, डाटा संबंधी कार्य, डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन शिक्षा और अन्य ज्ञान-आधारित सेवाएँ भी शामिल होती हैं। आधुनिक गिग अर्थव्यवस्था में कम कौशल वाले कार्यों से लेकर उच्च कौशल वाले ज्ञान-आधारित कार्यों तक की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

3. गिग कार्यबल के प्रकार

गिग कार्यबल को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है-

3.1 परिवहन आधारित कार्यबल- परिवहन क्षेत्र में डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने यात्रियों और सेवा प्रदाताओं को जोड़ने की नई व्यवस्था विकसित की है। व्यक्ति अपनी उपलब्धता के अनुसार परिवहन सेवा प्रदान करता है।

3.2 डिलीवरी कार्यबल- ऑनलाइन खरीदारी और डिजिटल भोजन सेवाओं के विस्तार के साथ डिलीवरी आधारित गिग कार्य तेजी से विकसित हुआ है। इसमें श्रमिकों को वस्तु, भोजन या अन्य उत्पाद निर्धारित स्थान तक पहुँचाने का कार्य करता है।

3.3 फ्रीलांस पेशेवर- फ्रीलांसिंग गिग अर्थव्यवस्था का ज्ञान-आधारित क्षेत्र है। इसमें लेखक, अनुवादक, डिजाइनर, प्रोग्रामर, शोध सहायक, डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ, वीडियो संपादक और सलाहकार जैसे पेशेवर विभिन्न ग्राहकों के लिए परियोजना-आधारित कार्य करते हैं।

3.4 ऑनलाइन शिक्षा एवं प्रशिक्षण- डिजिटल शिक्षा के विस्तार ने ऑनलाइन ट्यूटर और प्रशिक्षकों के लिए भी अवसर पैदा किए हैं। शिक्षक अपनी विशेषज्ञता के आधार पर अलग-अलग विद्यार्थियों या संस्थाओं को ऑनलाइन सेवाएँ प्रदान करते हैं।

3.5 डिजिटल कंटेंट एवं क्रिएटिव कार्य- वीडियो, ब्लॉग, डिजाइन, पॉडकास्ट, फोटोग्राफी, संपादन और अन्य डिजिटल सामग्री से संबंधित कार्य भी विकसित हुए हैं।

3.6 माइक्रोटास्क कार्य -कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म बहुत छोटे-छोटे कार्यों को अलग-अलग श्रमिकों में विभाजित करते हैं। डाटा वर्गीकरण, सामग्री सत्यापन, ट्रांसक्रिप्शन और अन्य छोटे डिजिटल कार्य हैं।

4. गिग कार्यबल का स्वरूप

गिग कार्यबल से आशय ऐसे श्रमिकों या कामगारों से है जो स्थायी एवं नियमित नौकरी न होकर अल्पकालिक, कार्य-आधारित, परियोजना-आधारित या मांग के अनुसार उपलब्ध होने वाले कार्य करते हैं। आधुनिक समय में इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के विस्तार होने से गिग कार्यबल के स्वरूप को भी व्यापक बना दिया है।

गिग कार्यबल के स्वरूप को निम्न प्रमुख बिंदुओं से समझा जा सकता है-

1. अस्थायी एवं कार्य-आधारित रोजगार- गिग कार्य सामान्यतः किसी स्थायी पद न होकर किसी विशेष कार्य या सेवा से संबंधित होता है। कार्य पूरा होने के बाद श्रमिक और ग्राहक के बीच का संबंध समाप्त हो जाता है।
2. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निर्भरता- गिग कार्यबल का बड़ा हिस्सा डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से कार्य प्राप्त करता है। प्लेटफॉर्म ग्राहक और श्रमिक को जोड़ना, कार्य उपलब्ध कराना, भुगतान करना आदि की भूमिका निभाते हैं।
3. कार्य समय में लचीलापन- इसमें कार्य समय लचीला होता है। श्रमिक अपनी उपलब्धता के अनुसार कार्य चुन सकता है। हालांकि वास्तविक लचीलापन कार्य की मांग और प्लेटफॉर्म की व्यवस्था पर निर्भर करता है।
4. आय की अनिश्चितता- गिग श्रमिक की आय निश्चित नहीं होती। आय कार्यों की संख्या, मांग, भुगतान दर, कार्य के समय और प्लेटफॉर्म की नीतियों पर निर्भर करती है।
5. अनेक आय स्रोत- एक गिग श्रमिक एक से अधिक प्लेटफॉर्म या ग्राहकों के लिए कार्य कर सकता है। इस कारण उसकी आय के अनेक स्त्रोत होते है।
6. स्थान-आधारित और ऑनलाइन कार्य- गिग कार्यबल को मुख्य रूप से दो भागों में बाटा जा सकता है—स्थान आधारित गिग कार्यबल जो विभिन्न स्थानों के आधार पर के करते है दूसरी और ऑनलाइन कार्य गिग वर्कर्स ऑनलाइन प्लेट फार्म पर कार्य करते है।
7. स्वतंत्र कार्य का स्वरूप- गिग श्रमिक को कई परिस्थितियों में स्वतंत्र कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वह अपने कौशल और समय के अनुसार अलग-अलग कार्य स्वीकार कर सकता है।

8. कौशल की विविधता- गिग कार्य केवल कम-कौशल वाले कार्यों तक सीमित नहीं है। इसमें डिलीवरी कर्मी और ड्राइवर से लेकर सॉफ्टवेयर डेवलपर, ग्राफिक डिजाइनर, शिक्षक, लेखक और डिजिटल सलाहकार तक शामिल होते हैं।
9. सामाजिक सुरक्षा की चुनौती- गिग कार्यबल के सामने स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना सुरक्षा, पेंशन, मातृत्व लाभ और अन्य सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं की उपलब्धता की एक चुनोती है।
10. रोजगार और उद्यमिता के बीच की स्थिति- इसमें व्यक्ति स्वयं कार्य करता है, लेकिन ग्राहक प्राप्त करने और कार्य संचालित करने में डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका होती है।
11. ग्रामीण क्षेत्रों में उभरता स्वरूप- डिजिटल कनेक्टिविटी के विस्तार होने से गिग कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी संभावनाएँ बढ़ रही है। ग्रामीण युवा ऑनलाइन फ्रीलांसिंग, डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन शिक्षा, स्थानीय उत्पादों की बिक्री तथा अन्य डिजिटल सेवाओं से दूर नही हैं।

5. शोध समीक्षा

1. Berg, Furrer, Harmon, Rani एवं Silberman (2018)- ने ऑनलाइन डिजिटल श्रम प्लेटफॉर्मों पर कार्य करने वाले श्रमिकों की कार्य परिस्थितियों का अध्ययन किया। अध्ययन में आय, कार्य की उपलब्धता, कार्य की तीव्रता, सामाजिक सुरक्षा तथा कार्य-जीवन संतुलन जैसे पक्षों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह रहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर श्रमिकों के लिए नए रोजगार अवसर तो पैदा होते हैं, लेकिन कार्य की अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसी समस्याएँ भी बनी रहती हैं।
2. International Labour Organization (2021)- की रिपोर्ट में डिजिटल प्लेटफॉर्मों के कारण रोजगार और कार्य संगठन में व्यापक बदलाव आए है। ऑनलाइन तथा स्थान-आधारित दोनों प्रकार के प्लेटफॉर्म में गिग वर्कर्स बढे है। इन प्लेटफॉर्म पर अर्थव्यवस्था में रोजगार के नए अवसर और लचीलापन प्रदान करती है, लेकिन आय, सामाजिक सुरक्षा, कार्य परिस्थितियों और श्रमिक अधिकारों से संबंधित समस्याएँ भी उत्पन्न करती है।
3. नीति आयोग (2022)- की रिपोर्ट में भारत में गिग वर्कर्स एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म में अर्थव्यवस्था के विकास, रोजगार क्षमता, श्रमिकों की स्थिति, कौशल विकास तथा सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकताओं का विश्लेषण किया गया है। रिपोर्ट यह संकेत करती है कि गिग अर्थव्यवस्था भारत के भविष्य में रोजगार बाजार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती है।
4. Rani, Frosch और Williams (2026)- अध्ययन में डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रोजगार के वास्तविक आकार को मापने में अभी भी आंकड़ों और सांख्यिकीय मानकों की कमी है। इसलिए भविष्य में गिग कार्यबल पर बेहतर शोध के लिए विश्वसनीय एवं तुलनीय आंकड़ों की आवश्यकता है।

6. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार है:

- गिग कार्यबल की आय, कार्य अवधि एवं रोजगार के स्रोत का विश्लेषण करना।
- गिग कार्यबल की सामाजिक सुरक्षा का आकलन करना।
- गिग कार्यबल की आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी चुनौतियों की पहचान करना।
- कौशल विकास एवं डिजिटल तकनीक के कारण गिग रोजगार के भविष्य के अवसरों का मूल्यांकन करना।

7. शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया। प्राथमिक आंकड़े अध्ययन क्षेत्र के इंदौर जिले के **100** गिग कार्यबल से प्रश्नावली एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए, जिनमें डिलीवरी कर्मी, ऑनलाइन फ्रीलांसर, डिजिटल एवं कंटेंट कार्यकर्ता, ऑनलाइन शिक्षण/ट्यूशन से जुड़े कार्यकर्ता, घरेलू एवं स्थानीय प्लेटफॉर्म आधारित सेवाओं तथा अन्य स्वतंत्र गिग कार्यकर्ताओं को शामिल किया गया। नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध शीर्षक के अध्ययन उद्देश्य अनुसार प्राप्त आंकड़ों का विस्तृत वर्णन निम्नानुसार है-

8. गिग कार्यबल की आय, कार्य-अवधि एवं रोजगार

अध्ययन के लिए चयनित 100 गिग कार्यबल में 35 प्रतिशत डिलीवरी कर्मी, 20 प्रतिशत ऑनलाइन फ्रीलांसर, 15 प्रतिशत डिजिटल एवं कंटेंट, 10 प्रतिशत ऑनलाइन शिक्षण/ट्यूशन, 10 प्रतिशत घरेलू एवं स्थानीय प्लेटफॉर्म आधारित सेवाओं से जुड़े तथा 10 प्रतिशत अन्य स्वतंत्र गिग कार्यों में संलग्न पाए गए। आय के आधार पर 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय ₹10,000 से कम, 38 प्रतिशत की ₹10,000–20,000, 29 प्रतिशत की ₹20,000–30,000 तथा 15 प्रतिशत की ₹30,000 से अधिक पाई गई। कार्य-अवधि के अंतर्गत 20 प्रतिशत कार्यबल एक वर्ष से कम, 41 प्रतिशत 1–3 वर्ष, 26 प्रतिशत 3–5 वर्ष तथा 13 प्रतिशत 5 वर्ष से अधिक समय से गिग कार्य से जुड़े हुए पाए गए। दैनिक कार्य समय के संबंध में 16 प्रतिशत 4 घंटे से कम, 31 प्रतिशत 4–6 घंटे, 35 प्रतिशत 6–8 घंटे तथा 18 प्रतिशत 8 घंटे से अधिक कार्य करते पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि गिग कार्य विभिन्न प्रकार के रोजगार अवसर उपलब्ध करा रहा है, लेकिन अधिकांश श्रमिक मध्यम आय वर्ग में केंद्रित हैं और पर्याप्त आय अर्जित करने के लिए प्रतिदिन अपेक्षाकृत अधिक समय कार्य करते हैं। परिणामतः गिग कार्य कई कार्यबल के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन रहा है, किंतु आय की स्थिरता अभी भी कम दिखाई देती है।

9. गिग कार्यबल को सामाजिक सुरक्षा का आकलन

सामाजिक सुरक्षा के अध्ययन से पता चला कि 100 उत्तरदाताओं में केवल 14 प्रतिशत कार्यबल को पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा सुविधाएँ प्राप्त हैं, जबकि 32 प्रतिशत को सीमित स्तर पर सुविधाएँ उपलब्ध हैं और 54 प्रतिशत श्रमिकों ने किसी विशेष सामाजिक सुरक्षा का अभाव की जानकारी दी। स्वास्थ्य एवं दुर्घटना सुरक्षा के संदर्भ में 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पर्याप्त सुरक्षा, 29 प्रतिशत के पास आंशिक सुरक्षा तथा 60 प्रतिशत के पास पर्याप्त सुरक्षा का अभाव पाया गया। इसी प्रकार पेंशन, भविष्य की आय सुरक्षा तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं के संबंध में भी अधिकांश उत्तरदाता असुरक्षित पाए गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि गिग कार्यबल के सामने केवल रोजगार प्राप्त करने की समस्या नहीं है, बल्कि रोजगार के दौरान और भविष्य के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अध्ययन का परिणाम यह संकेत देता है कि गिग रोजगार को अधिक टिकाऊ बनाने के लिए स्वास्थ्य, दुर्घटना, बीमा, पेंशन तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं की सुलभ व्यवस्था आवश्यक है।

10. गिग कार्यबल की आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी चुनौतियों

अध्ययन में गिग कार्यबल की प्रमुख आर्थिक चुनौतियों में आय की अनिश्चितता सबसे महत्वपूर्ण है, जिसे 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रमुख समस्या बताया। इसके अलावा 49 प्रतिशत ने कार्य की मांग में उतार-चढ़ाव, 43 प्रतिशत ने कार्य से संबंधित लागत तथा 39 प्रतिशत ने प्लेटफॉर्म द्वारा की जाने वाली कटौती या कमीशन को समस्या माना। सामाजिक स्तर पर 58 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामाजिक सुरक्षा के अभाव, 46 प्रतिशत ने भविष्य के रोजगार को लेकर

अनिश्चितता, 31 प्रतिशत ने परिवार को पर्याप्त समय न दे पाने तथा 35 प्रतिशत ने सामूहिक प्रतिनिधित्व की कमी को चुनौती के रूप में स्वीकार किया। तकनीकी स्तर पर 45 प्रतिशत कार्यबल ने डिजिटल प्लेटफॉर्म या एप संबंधी समस्याएँ, 42 प्रतिशत ने ग्राहक रेटिंग एवं मूल्यांकन प्रणाली, 36 प्रतिशत ने एल्गोरिदम आधारित कार्य आवंटन तथा 24 प्रतिशत ने डिजिटल कौशल की कमी को प्रमुख समस्या बताया। इन परिणामों से स्पष्ट है कि गिग कार्यबल की चुनौतियाँ केवल आर्थिक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक एवं तकनीकी आयाम भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से आय की अनिश्चितता, सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा प्लेटफॉर्म पर तकनीकी निर्भरता गिग कार्यबल की प्रमुख समस्याओं के रूप में सामने आती हैं।

11. कौशल विकास एवं डिजिटल तकनीक के कारण गिग रोजगार के भविष्य के अवसर

भविष्य के रोजगार अवसरों के संबंध में 100 उत्तरदाताओं में 44 प्रतिशत ने कौशल विकास की बहुत अधिक आवश्यकता, 34 प्रतिशत ने अधिक आवश्यकता, 15 प्रतिशत ने सामान्य तथा 7 प्रतिशत ने कम आवश्यकता व्यक्त की। इस प्रकार कुल 78 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि भविष्य में गिग कार्य में बने रहने तथा आय बढ़ाने के लिए कौशल उन्नयन आवश्यक होगा। डिजिटल तकनीक के प्रभाव के संबंध में 32 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि इससे रोजगार के अवसर बहुत बढ़ेंगे, 43 प्रतिशत ने अवसर बढ़ने की संभावना व्यक्त की, जबकि 17 प्रतिशत ने सामान्य प्रभाव और 8 प्रतिशत ने अवसरों में कमी की संभावना व्यक्त की। इसके अतिरिक्त 100 में से 47 प्रतिशत कार्यबल भविष्य में गिग कार्य को अपना प्रमुख रोजगार बनाए रखने के इच्छुक पाए गए, जबकि 36 प्रतिशत ने कहा कि वे परिस्थितियों के अनुसार इसे जारी रखेंगे और 17 प्रतिशत ने इसे स्थायी भविष्य के रोजगार के रूप में स्वीकार नहीं किया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश गिग श्रमिक डिजिटल तकनीक को नए रोजगार अवसरों के स्रोत के रूप में देखते हैं, लेकिन वे यह भी मानते हैं कि भविष्य के श्रम बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए डिजिटल साक्षरता, तकनीकी दक्षता, संचार क्षमता तथा निरंतर कौशल विकास आवश्यक होगा।

11. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि गिग कार्यबल आधुनिक श्रम बाजार में रोजगार एवं आय के एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक स्रोत के रूप में उभर रहा है, जिसमें डिलीवरी, ऑनलाइन फ्रीलांसिंग, डिजिटल एवं कंटेंट कार्य, ऑनलाइन शिक्षण तथा स्थानीय सेवाओं जैसे विभिन्न कार्य शामिल हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि गिग कार्य श्रमिकों को रोजगार के अवसर, कार्य में लचीलापन तथा आय के विविध स्रोत उपलब्ध कराता है, किंतु आय की अनिश्चितता, कार्य की अस्थिरता, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, कार्य-संबंधी जोखिम, प्लेटफॉर्म पर निर्भरता तथा तकनीकी चुनौतियाँ इसकी प्रमुख सीमाएँ हैं। दूसरी ओर, डिजिटल तकनीक के विस्तार और कौशल विकास की बढ़ती आवश्यकता से गिग रोजगार के भविष्य में नए एवं बेहतर अवसर उत्पन्न होने की संभावना है। अतः गिग कार्यबल को अधिक सुरक्षित, समावेशी एवं टिकाऊ बनाने के लिए सामाजिक सुरक्षा का विस्तार, पारदर्शी भुगतान व्यवस्था, कौशल उन्नयन, डिजिटल साक्षरता तथा श्रमिक-अनुकूल नीतिगत ढाँचे को प्राथमिकता देना आवश्यक है। इससे गिग अर्थव्यवस्था रोजगार सृजन और समावेशी आर्थिक विकास में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

सुझाव

1. **सामाजिक सुरक्षा का विस्तार**- गिग कार्यबल के लिए स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना बीमा, पेंशन तथा भविष्य की आय सुरक्षा जैसी सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं को सुलभ और अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। सरकार एवं गिग प्लेटफॉर्म कंपनियों के सहयोग से श्रमिकों के लिए विशेष सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।

2. **आय की स्थिरता एवं उचित पारिश्रमिक सुनिश्चित करना**- गिग कार्यबल की प्रमुख समस्या आय की अनिश्चितता है। इसलिए न्यूनतम पारिश्रमिक, पारदर्शी कमीशन व्यवस्था तथा प्लेटफॉर्म द्वारा की जाने वाली कटौती की स्पष्ट जानकारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। कार्य की मांग में उतार-चढ़ाव के कारण होने वाली आय अस्थिरता को कम करने के लिए उपयुक्त नीतिगत प्रावधान किए जाने चाहिए।
3. **कौशल विकास एवं डिजिटल दक्षता को बढ़ावा देना**- गिग रोजगार के भविष्य को देखते हुए श्रमिकों के लिए नियमित डिजिटल कौशल, तकनीकी दक्षता, संचार कौशल तथा ग्राहक प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और डिजिटल प्लेटफॉर्म कंपनियों के सहयोग से कम लागत अथवा निःशुल्क कौशल विकास कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
4. **प्लेटफॉर्म कार्य में पारदर्शिता एवं श्रमिक अधिकारों का संरक्षण**- कार्य आवंटन, ग्राहक रेटिंग, एल्गोरिदम तथा प्लेटफॉर्म कमीशन से संबंधित प्रक्रियाओं में पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। श्रमिकों को शिकायत निवारण, सामूहिक प्रतिनिधित्व तथा अनुचित रेटिंग या कार्य आवंटन के विरुद्ध अपील का अधिकार दिया जाना चाहिए, ताकि गिग रोजगार को अधिक सुरक्षित, न्यायपूर्ण एवं टिकाऊ बनाया जा सके।

संदर्भ सूची — APA शैली

1. Berg, J., Furrer, M., Harmon, E., Rani, U., & Silberman, M. S. (2018). *Digital labour platforms and the future of work: Towards decent work in the online world*. International Labour Organization.
2. International Labour Organization. (2021). *World employment and social outlook 2021: The role of digital labour platforms in transforming the world of work*. International Labour Office..
3. International Labour Organization. (2024). *Expansion of the gig and platform economy in India: Opportunities for employer and business member organizations*. International Labour Office.
4. NITI Aayog. (2022). *India's booming gig and platform economy: Perspectives and recommendations on the future of work*. Government of India.
5. Rani, U., Frosch, M., & Williams, M. (2026). *Digital labour platforms: Number of platforms and workers*. International Labour Organization. https://doi.org/10.54394/00033253
6. World Bank. (2019). *World development report 2019: The changing nature of work*. World Bank.